Q :- मनोविदलता के लक्षण एवं कारणों का वर्णन करें।

Answer :→ मनोविदलता (Schizophrenia) को पहले Dementia Praecox के नाम से जाना जाता था। Dementia Praecox शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग क्रेपलिन ने किया था, जिसका तात्पर्य मनोविच्छिन्नता है। Schizophrenia शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ब्लयुलर (Bleuler) ने सन् 1911 ई० में किया था। उन्होंने इस रोग को व्यक्ति के व्यक्तित्व का विभाजन से बतलाया है। बाद में इस अर्थ को भी छोड़ दिया गया। आधुनिक युग में इस संबंध में अनेक अनुसंधान किये जा रहे हैं तथा इसके परिभाषाओं में भी परिवर्तन हो रहा है। इसकी परिभाषा देते हुए डी० सी० कोलमैन ने कहा है कि "मनोविदलता वह विवरणात्मक पद है जिसमें मनोविकृति से संबंधित कई विकारों का बोध होता है। इसमें बड़े पैमाने पर वास्तविकता की तोड़-मरोड़ दिखाई देती है। रोगी सामाजिक अन्तःक्रियाओं से पलायन करता है। व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण विचार और संवेग अपूर्ण और विघटित रूप में होते हैं।"

कोलमैन आगे कहते हैं कि मनोविदलता शब्द का प्रयोग स्नायु विकृतिघृणप्रतिक्रियाओं के समूह के लिए किया जाता है, जिसमें रोगी की वास्तविकता के साथ संबंध स्थापित करने की योग्यता तथा उसकी संवेगात्मक एवं बौद्धिक प्रक्रियाओं में मौलिक उपद्रव उत्पन्न हो जाते हैं।

ऐसे तो हर उम्र के लोग इस मानसिक रोग के शिकार हो सकते हैं फिर भी पन्द्रह से पच्चीस वर्ष की आयु के बीच यह रोग विशेष मात्रा में होती है। इस रोग से स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष ज्यादा पीड़ित होते हैं। साथ ही साथ शहर के निवासी देहात के निवासियों की तुलना में इस रोग के ज्यादा शिकार होते हैं।

Symptoms [लक्षण] :→ मनोविदलता के रोगियों में बहुत प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक लक्षण देखे जाते हैं, जिनमें कुछ मुख्य लक्षण निम्नलिखित हैं :-

(1) संवेगात्मक उदासीनता :→ मनोविदलता का रोगी संवेगात्मक रूप से उदासीन रहता है अर्थात् रोगी में

Emotional apathy पाया जाता है। फिशर (Fisher) ने Emotional apathy को मनोविदलता का Most Common Symptom स्वीकार किया है। रोगी बाह्य वातावरण के प्रति कोई प्रतिक्रिया नहीं करता है। यहाँ तक कि यदि उसके परिवार में किसी व्यक्ति की मौत हो जाय तो भी उसे किसी प्रकार की दुःखद अनुभूति नहीं होती है। प्रश्न पूछे जाने पर वह संक्षिप्त उत्तर देता है। कभी-कभी दो विरोधी संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ एक साथ देखने को मिलती है। उदाहरण के लिए, उसमें रोने और हँसने की क्रिया एक साथ देखी जा सकती है। रोगी अपने शारीरिक अवस्थाओं के प्रति काफी उदासीन रहता है उसे खाने-पीने की कोई परवाह नहीं रहती। मैकडुगल ने भी Emotional apathy को इस मानसिक रोग का एक प्रमुख लक्षण माना है।

(2) मानसिक ह्रास :→ मनोविदलता के सभी रोगियों में मानसिक ह्रास के लक्षण देखे जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि उसकी मानसिक क्रियाएँ विभिन्न दोषों से युक्त रहती है। उसका चिंतन पूर्ण रूप से अव्यवस्थित रहता है। उसकी स्मृति बहुत कमजोर होती है। वे अपनी परिस्थितियों को समझने में असमर्थ रहते हैं। और यहाँ तक कि अपना नाम, पता आदि को भी नहीं बतला पाते। मनोवैज्ञानिक अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि इसके रोगी का I.Q. सामान्य से बहुत कम होता है।

(3) विभ्रम :→ मनोविदलता के रोगी का प्रधान लक्षण विभ्रम है। इससे ग्रस्त रोगीयों में अनेक प्रकार के विभ्रम देखे जाते हैं, फिर भी उनमें संरक्षण सम्बन्धी विभ्रम की प्रधानता रहती है। मनोविदलता का रोगी ऐसा अनुभव करता है कि उसे भगवान या किसी काल्पनिक व्यक्ति की आवाज सुनाई पड़ रही है। कभी-कभी वह भगवान की आवाज को सुनता है और चिल्लाता है। रोगी यह भी समझता है कि सभी लोग उसके दुश्मन है और जहर देकर उसे मारना चाहते हैं खाने में उसे कोई स्वाद नहीं मिलता और वह आस-पास के दुर्गन्ध से सशंकित रहता है। इस प्रकार रोगी

विभिन्न प्रकार के विभ्रमों का शिकार बन जाता है।

(4) व्यामोह :→ मनोविदलता के रोगियों में व्यामोह [delusions] के लक्षण भी देखे जाते हैं। रोगी यह अनुभव करता है कि लोग उसे जान से मारने का षड्यंत्र कर रहे हैं। चिकित्सक को भी वह दुश्मन समझता है। दवा को जहर समझ कर पीने से इन्कार करता है। डॉ॰ पेज ने मनोविदलता के रोगियों के व्यामोह की तुलना सामान्य व्यक्ति के स्वप्न से किया है। जिस प्रकार स्वप्न की स्थिति में दृश्य को हम देखते हैं, वे शून्य प्रतीत होते हैं, ठीक उसी प्रकार इस रोग से पीड़ित रोगी अपने delusions को शून्य स्वीकार कर लेता है।

(5) भाषा दोष :→ रोगी में बोलने की गड़बड़ी के लक्षण भी देखे जाते हैं। इनके वाक्य निरर्थक एवं लम्बे होते हैं। कभी-कभी कई शब्दों को मिलाकर एक नए वाक्य का निर्माण कर लेते हैं। कभी रोगी इतना तेज रफ्तार से बोलता है, जिसे दूसरे लोग सुन नहीं पाते हैं। इसी प्रकार रोगी में विचित्र लेखन के लक्षण देखे जाते हैं। उसकी लेखन शैली दोषपूर्ण होती है। लिखने के सिलसिले में symbols, lines drawing and words. को एक ही साथ मिला देते हैं। व्याकरण के नियमों का वे कभी पालन नहीं करते हैं।

(6) शारीरिक क्षमता का ह्रास :→ मनोविदलता का रोगी शारीरिक रूप से कमजोर होता है। शरीर में मिहनत करने की क्षमता नहीं होती। वह हमेशा नींद की कमी महसूस करता है। इस प्रकार Schizophrenia के रोगी में अनेक प्रकार के मानसिक और शारीरिक दोष पाये जाते हैं।

कारण [ETIOLOGY] :→ मनोविदलता एक जटिल मानसिक रोग है, अतः इसके अनेक कारण हैं। मनोवैज्ञानिकों एवं मनोचिकित्सकों ने इसके अनेक कारणों की चर्चा की है। उन कारणों में जैविक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारण आते हैं।

(1) वंशानुक्रम :→ कुछ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, इस मानसिक रोग का कारण वंशानुक्रम है। Coleman ने करीब एक हजार रोगियों के परिवार का अध्ययन किया और बताया कि यह रोग वंश परम्परा के कारण होता है। इसी प्रकार स्पेयर्र

(Slodart) ने अपने अध्ययन के आधार पर यह बतलाया कि यह रोग बच्चों में उनकी माँ से आता है। व्हाइट (White), रोसनॉफ (Rosanoff) आदि मनोवैज्ञानिकों ने भी वंश परम्परा को इस रोग कारण बतलाया है। क्रेपलिन (Kraepelin) ने मनोविदलता का कारण disturbance in Sex gland माना है। इनका कहना है कि Sex gland में गड़बड़ी होने से व्यक्ति का पाचन-क्रिया दोषपूर्ण हो जाता है। फलस्वरूप वह इस मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। लेकिन क्रेपलिन के विचारों से सभी मनोवैज्ञानिक सहमत नहीं है।

(2) गलत अभियोजन :→ एडोल्फ मेयर ने जीवन की असफलता और वर्तमान परिस्थितियों के साथ गलत अभियोजन को इस मानसिक रोग का कारण के रूप में स्वीकार किया है। युंग (Jung) ने यौन ग्रंथियों के दमन [Repression of Libido] के आधार पर इस रोग के कारण विज्ञान की व्याख्या की है। एडलर (Adler) ने आत्मस्थापना से उत्पन्न हीनता की भावना को इस रोग का कारण माना है।

(3) मनोलैंगिक विकास :→ प्रसिद्ध मनोविश्लेषक फ्रायड (Freud) ने मनोविदलता की उत्पत्ति में मनोलैंगिक विकास को आधार माना है। उनके अनुसार मनोलैंगिक विकास के सिलसिले में ही व्यक्ति के अन्दर कई मनोग्रन्थि पड़ जाती है। जब व्यक्ति के अन्दर Sex से सम्बन्धित कई मनोग्रन्थियाँ पड़ती हैं तो वह मानसिक संघर्ष से पीड़ित रहता है, जिसके फलस्वरूप मानसिक संघर्ष का समाधान अचेतन रूप से Conversion के माध्यम से होता है। Conversion के कारण भी व्यक्ति इस मानसिक रोग का शिकार हो जाता है। <u>ऑटोरैंक</u> ने फ्रायड के मत का खण्डन करते हुए कहा है कि यह मानसिक रोग Feminine Tendency तथा Masculine Tendency के बीच मानसिक संघर्ष के कारण होता है।

(4) शैशवकालीन मनोआघात मनोविदलता के मनोवैज्ञानिक कारणों में शैशवकालीन मनोआघातों को भी विशेष महत्व दिया गया है। यदि शैशवावस्था में कुछ ऐसी घटनाएँ घटित हो जायें जिनको बचपन में कुछ जीम

मनोवैज्ञानिक आघात पहुँचा हो, तो आगे चलकर यही कारण मनोविदलता के लक्षणों को उत्पन्न करता है।

(5) निराशा एवं अन्तर्द्वन्द्व कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अपने अध्ययनों में देखा कि अन्य मानसिक बीमारियों की तरह निराशा और अन्तर्द्वन्द्व इस मानसिक रोग का भी कारण है।

(6) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारण :→

मनोविदलता के कारणों की व्याख्या कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आधार पर करने का प्रयास किया। इस क्रम में उन्होंने कहा है कि मनोविदलता के रोगियों की दर निम्न सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों में अधिक होती है। कुछ लोगों ने बतलाया है कि मनोविदलता के लिए गरीबी, बेकारी, सामाजिक विघटन, गंदी बस्तियाँ, असुरक्षा की भावना, सांस्कृतिक कारण आदि जिम्मेदार होते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मनोविदलता एक तीव्र मानसिक रोग है, जिसमें अनेक शारीरिक तथा मानसिक लक्षण देखे जाते हैं। इसके कारणों को लेकर मनोवैज्ञानिकों में मतैक्य नहीं है। इस दिशा में अभी अध्ययन की कमी है।

Scanned with OKEN Scanner